समाज में किन्नरों को उचित सम्मान मिले– प्रो अच्युत सामंत

कादंबिनी ओडिया मासिक पत्रिका के 'किन्नर विशेषांक' को 12 मार्च को लोकार्पित किया किन्नर आचार्य महामण्डलेश्वर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि के रूप में ओडिशा के किन्नर मीरा परिडा एवं कादंबिनी की सम्पादिका डॉ. इति सामंत समेत सैकड़ों आमंत्रित किन्नरों, कटक–भुवनेश्वर के महिला एवं पुरुष हितैषियों आदि का स्वागत कीट–कीस व कादंबिनी के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने किया।

कीट–कीस को पूर्वी भारत का आधुनिक तीर्थस्थल एवं विश्व का सबसे बड़ा दरिद्रनारायण सेवा केन्द्र मानकर अवलोकन हेतु विश्व के हजारों शिक्षाविद्, शोधार्थी, नोबेल पुरस्कार विजेता, विधिवेत्ता, राजनयिक, अभिनेता, खिलाड़ी, उद्योगपति एवं समाजसेवी नियमित रूप से आ रहे हैं। डॉ. सामंत ने बताया कि वे आज से किन्नरोद्धार की जिम्मेदारी भी वहन करेंगे। वे चाहेंगे कि समाज के सबसे तिरस्कृत समाज किन्नर समाज को समाज से प्यार दिलाएँ और उन्हें भी एक अच्छे इंसान के रूप में जीवन जीने का मौका दिलाएँ। जिन माँ–बाप को अंधा, लंगड़ा–लूला, गूंगा–बहरा, अपाहिज बच्चा स्वीकार होता है, वही माँ–बाप घर में किन्नर पैदा होते ही उसको अपने से कैसे अलग कर देते हैं? उसमें किन्नर का क्या दोष है? उनके बच्चे स्कूलों में सबके साथ पढ़ नहीं सकते, वे किन्नर कैसे अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकते हैं? ऐसे में किन्नर आचार्य महामण्डलेश्वर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी का विश्व में किन्नरों की मर्यादा एवं सम्मान के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई जायज है।

अपने संबोधन में किन्नर आचार्य त्रिपाठी ने बताया कि उन्हें आज यहाँ विदेह डॉ. अच्युत सामंत, समाजसेविका डॉ. इति सामंत, ओडिशा की किन्नर मीरा परिडा आदि के साथ बैठकर बहुत अच्छा लग रहा है। उन्होंने अपनी आपबीती की जानकारी देते हुए अपने बाल्यकाल का उल्लेख किया जब उनको मात्र 13 साल की उम्र में ही उनके माता–पिता ने घर से अलग कर दिया था। उन्होंने बताया कि अर्धनारीश्वर कहलाने वाले किन्नर, अपने आशीर्वाद से सबके मंगल का आशीष देने वाले किन्नर समाज के लिए सबसे अधिक उपेक्षित व तिरस्कृत क्यों हैं? वे जो हैं सो हैं। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उन्होंने कठिन संघर्ष कर उच्च शिक्षा पाई और आज पूरे विश्व में किन्नर समुदाय के हितों की रक्षा कर रही हैं। वे भारतीय समाज से मात्र इतना ही चाहती हैं कि समाज उनके प्रति प्रेम का भाव रखे। उन्हें भी समाज में इज्जत के साथ रहने का मौका दें। इस अवसर पर किन्नर मीरा परिडा ने बताया कि यह दिन उनके जीवन के लिए चिरस्मरणीय दिन रहेगा। प्राप्त जानकारी के आधार पर किन्नर आचार्य त्रिपाठी अब तक अनेक हिन्दू देवी–देवताओं के मंदिरों का निर्माण करा चुकी हैं और सैकड़ों मुसलमानों को हिन्दू बना चुकी हैं। वे आज भी अपनी प्रकाशित अनुभूतियों के माध्यम से किन्नर समुदाय के हितों की रक्षा के लिए सतत आगे बढ़ रही हैं।

इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष श्री सान्तनु कुमार आचार्य ने बताया कि किन्नर अर्धनारीश्वर के रूप में मान्य हैं। ये समाज के तीसरे लिंग के रूप में भी मान्य हैं। ऐसे में कादंबिनी का यह अंक और आज का यह किन्नर समागम दोनों ऐतिहासिक हैं। धन्यवादज्ञापन की औपचारिकता कादंबिनी की सम्पादिका डॉ. इति सामंत ने निभाई। किन्नर समागम में डॉ. अच्युत सामंत ने उपस्थित सभी किन्नरों का सम्मान किया और समाज के सभी वर्गों के लोगों से यह अपील की है कि वे समाज में किन्नरों को भी उचित मान–सम्मान दिलाने में सभी सहयोग करें।

जय जगन्नाथ!